हिंदी (लोकभारती)

अभ्यास के लिए कृतिपत्रिका 1 के उत्तर

प्र. 1. (अ)

(1)

(i)

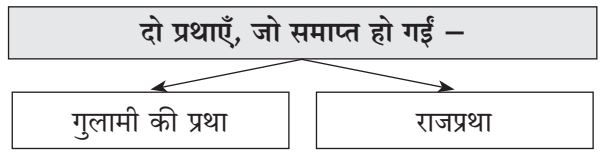

(ii)

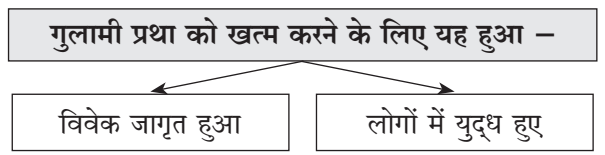

(2)

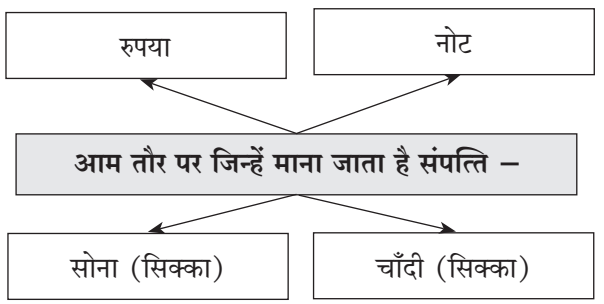

(3) (i) प्रथा = रिवाज
(ii) युद्ध = लड़ाई
(iii) हुकूमत = शासन
(iv) गुलामी = दासता।

(4) स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले हमारे देश में छोटी-बड़ी अनेक रियासतें थीं। राजा, बादशाह और तालुकेदार इन रियासतों के मालिक थे। इनके राज में रहने वाली जनता इनकी प्रजा कहलाती थी। राजा और बादशाह जनता से तरह-तरह के कर वसूल करते थे और कर अदा न कर पाने पर जनता पर तरह-तरह के अत्याचार करते थे। एक तरह से जनता को ये अपना गुलाम समझते थे और उसका शोषण करने में जरा भी नहीं झिझकते थे। जनता इनसे त्रस्त थी। इसके अलावा ये राजा और बादशाह अपने स्वार्थ के लिए आपस में लड़ते-भिड़ते थे और मौका मिलने पर एक-दूसरे की रियासतों पर कब्जा कर जनता में लूटपाट किया करते थे। असहाय जनता की कोई सुनने वाला नहीं था। आजादी मिलने के बाद इन छोटी-छोटी रियासतों को खत्म कर भारत संघ में मिला लिया गया। इसके बाद इन राजाओं और बादशाहों का राज खत्म हो गया। इसके साथ ही समाप्त हो गया जनता पर इनका अत्याचार। फिर तो प्रजातंत्र में न कोई किसी का राजा रहा न कोई किसी की प्रजा। सबको समान अधिकार उपलब्ध हो गए।

प्र. 1. (आ)

(1) (i) गोवा की शाम बड़ी अच्छी होती है।

(ii) अरब सागर देखने का उत्साह बढ़ता जा रहा था।

(iii) यही जीवन का सत्य भी है।

(iv) पक्षी सुस्ताने के लिए किनारे पर बैठ जाते हैं।

(2)

(i) **बेनालियम बीच की विशेषताएँ –**

- खूबसूरत
- शांत

(ii) **गद्यांश में उल्लेखित कोई दो प्राणी –**

- पक्षी
- कुत्ता

(3) (i) हवा – हवाएँ (ii) मछली – मछलियाँ

(iii) लहर – लहरें (iv) बच्चे – बच्चा।

(4) भारत के पश्चिमी समुद्र तट पर बसे गोवा की खूबसूरती के समान यहाँ की शामें भी अद्‌भुत होती हैं। जैसे-जैसे शाम होती है, गोवा मस्ती में डूबने लगता है। सागर के तट पर चाँदी जैसी रेत, नीलम जैसा पानी, चर्च, नारियल के पेड़ों का सौंदर्य मन को मोह लेता है। दूर-दूर तक विदेशी सैलानियों की भीड़ दिखाई देती है, कोई उछल रहा है, कोई कूद रहा है, कोई नाच रहा है। बीच पर तरह-तरह के वॉटर स्पोर्ट्स चल रहे हैं। कहीं मोटरबोट राइडिंग हो रही है, तो कहीं पैराशूट राइडिंग। सैलानियों के लिए क्रूज एक अलग ही आकर्षण होता है। क्रूज अर्थात एक छोटे से स्टीमर में सौ-डेढ़ सौ लोग संगीत की तेज धुन पर थिरकते हुए। यह स्टीमर करीब एक घंटे की घुमावदार परिक्रमा कराता है।

प्र. 1. (इ)

(1) **गद्यांश में वर्णित स्वामी विवेकानंद के कार्य –**

- सेवाव्रती संन्यासियों की मंडली बनाई।
- दीन-दुखियों की सेवा की।
- सेवाश्रम खोल दिए।
- अनाथालय खोल दिए।

(2) दुनिया में ऐसे असंख्य लोग हैं, जो तरह-तरह के असाध्य रोगों एवं दिल दहला देने वाले कष्टों से पीड़ित हैं। इनमें से अनेक लोग ऐसे हैं, जिनका कोई सहारा नहीं है। जिनके पास डॉक्टर भी फटकने की हिम्मत नहीं करते। समाज इन्हें भगवान के भरोसे छोड़ देता है। पर ऐसे में भी कुछ ऐसी महान विभूतियाँ होती हैं, जिनसे इन प्राणियों का कष्ट देखा नहीं जाता और वे इन बेसहारा लोगों को सहारा देने दौड़ पड़ते हैं। ये जी-जान से उनकी सेवा में जुट जाते हैं और उस सेवा को ही अपना एकमात्र लक्ष्य बना लेते हैं। ऐसे दयालु सेवकों की सेवा से असाध्य रोगों से तड़पते हुए लोगों के जीवन में नवीन आशा का संचार होता है। ये सेवाभावी लोग बेसहारा दीन-दुखियों के जीवन में फरिश्ता बन कर अवतरित होते हैं। ये लोग दूसरों को जीवन देने के लिए अपना जीवन होम कर देते हैं। बाबा आमटे, स्वामी विवेकानंद, गाडगे महाराज,

मदर टेरेसा आदि ऐसे ही फरिश्ते हैं। मानव जीवन का उद्‌देश्य दूसरों की मदद करना है। दीन-दुखियों की सेवा ईश्वर की सेवा करने के समान माना गया है।

संकट या आपदा के समय एक देश दूसरे देश की मदद के लिए आ खड़े होते हैं। इस विचारधारा में भी सेवा भावना ही प्रमुख है।

इस तरह सेवा भावना का बहुत महत्त्व है।

प्र. 2. (अ)

(1) (i) हिमालय – आँगन (ii) किरण – उपहार

(iii) विमल – वाणी (iv) कोमल – कर।

(2) (i) संपूर्ण – अखिल (ii) शोकरहित – अशोक

(iii) संसार – संसृति (iv) आकाश – व्योम।

(3) भारत देश हिमालय के आँगन के समान है। प्रतिदिन उषा भारत को सूर्य की किरणों का उपहार देती है, मानो हँसकर भारत-भूमि का अभिनंदन कर रही हो। ओस की बूँदों पर जब प्रातःकालीन सूर्य की रश्मियाँ पड़ती हैं, तो ओस की बूँदें चमकने लगती हैं और ऐसा लगता है मानो, उषा ने भारत को हीरों का हार पहना दिया हो।

सबसे पहले ज्ञान का उदय भारत में ही हुआ। अर्थात सबसे पहले हम जाग्रत हुए। फिर हमने पूरे विश्व में ज्ञान का प्रसार किया। इसके कारण समग्र संसार आलोकित हो गया। अज्ञानरूपी अंधकार का विनाश हुआ और संपूर्ण सृष्टि के सभी दुख-शोक दूर हो गए।

प्र. 2. (आ)

(1) (i)

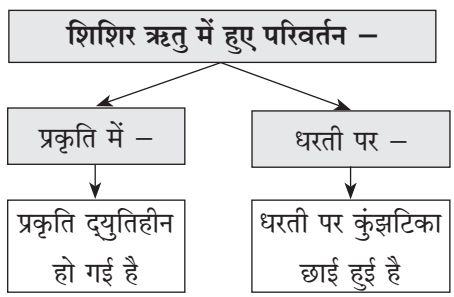

(ii)

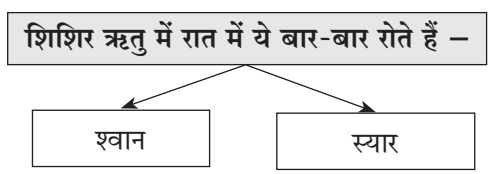

(2) (i) नृप – पुल्लिंग (ii) प्रकृति – स्त्रीलिंग

(iii) अवनि – स्त्रीलिंग (iv) निशा – स्त्रीलिंग।

(3) कवि कहते हैं कि शिशिर ऋतु के भाई हेमंत का समय बीत गया है। अब शिशिर ऋतु का आगमन हो गया है। शिशिर ऋतु की कँपा देने वाली ठंड के कारण प्रकृति की आभा खत्म हो गई है और वह कांतिरहित हो गई है। पृथ्वी पर धुँधलका छा गया है।

ठंड के कारण खूब बर्फ गिर रही है। इससे तालाबों में खिले हुए कमल के फूलों को बहुत कष्ट हो रहा है। कवि कहते हैं यह कष्ट कुछ उसी तरह का है, जैसे किसी निर्दयी और अन्यायी राजा के तरह-तरह के दंडों से उसके राज्य की प्रजा दुखी होती है।

प्र. 3. (अ)

(1) (i)

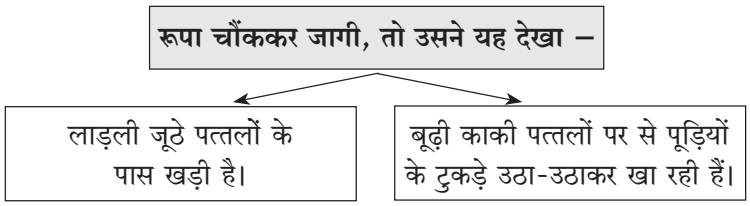

(ii)

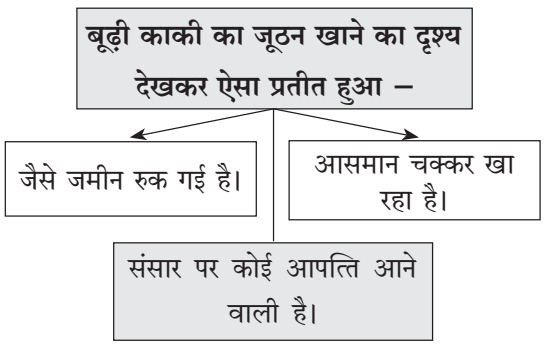

(2) हमारे देश में शादी-ब्याह तथा छोटे-मोटे पारिवारिक समारोहों में प्रीतिभोज में लोगों को खिलाने-पिलाने की पुरानी परंपरा चली आ रही है। समर्थ व्यक्तियों को इस तरह का खर्च करना ज्यादा नहीं अखरता, पर आर्थिक दृष्टि सें कमजोर लोगों के लिए इस तरह के खर्च का भार उठाना मुश्किल होता है। पर सामाजिक बंधनों तथा अपने नाम के लिए ऐसे समारोह आयोजित करना आज एक फैशन हो गया हैं। यह फैशन दिनोदिन बढ़ता ही जा रहा है। कुछ लोग तो अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कर्ज लेकर लोगों को बुलाकर खिलाते-पिलाते हैं। बाद में यह कर्ज चुकाना उनके लिए समस्या बन जाता है और उन्हें अपनी जायदाद तक बेचनी पड़ जाती है। लोगों को इस तरह के उत्सवों में अनावश्यक रूप से पैसे उड़ाने से बाज आना चाहिए। इस तरह के उत्सवों-समारोहों में अनाप-शनाप खर्च करना अपने ऊपर एक तरह का आर्थिक बोझ लादना है, जिससे कोई लाभ नहीं होता।

प्र. 3. (आ)

(1) (i)

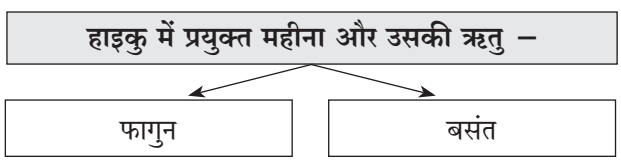

(ii) गुलाब का फूल काँटों के बीच भी हँसता है, खिलखिलाता है। वह हमें हर पल प्रेरणा देता है कि हमें परेशानियों से घबराए बिना अपना काम करते जाना है।

(2) फागुन का महीना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। इस महीने में प्रकृति में चारों ओर नवीनता दिखाई देती है। खेत सरसों के पीले-पीले फूलों से भर जाते हैं। इन्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे जमीन पर पीले रंग की विशाल चादरें बिछा दी गई हों। बीच-बीच में अलसी के नीले-नीले फूल पीले रंग पर छाप जैसे लगते हैं। पलाश के वन लाल रंग के बड़े-बड़े फूलों से लद जाते हैं। दूर से इन वनों को देखकर ऐसा लगता है, मानो पेड़ों से आग की लपटें निकल रही हों। विभिन्न प्रकार के पेड़ों पर गुलाबी रंग की नई-नई कोंपलें आ जाती हैं। इन्हें देखकर लगता है जैसे ये पेड़ गुलाबी रंग के वस्त्रों से सज गए हैं। इनके अतिरिक्त फागुन के महीने में ही तो होली का त्योहार आता है जब चारों ओर तरह-तरह के रंगों और अबीर-गुलाल की बहार आ जाती है। लोग खुशी से एक-दूसरे को रंगों से सराबोर कर देते हैं। इस तरह फागुन के महीने में प्रकृति तरह-तरह के रंगों से रँग जाती है।

प्र. 4.

(1) दशरथ – व्यक्तिवाचक संज्ञा।

(2) (i) वे घर के अंदर चले आए।

(ii) यह काम अब उनके वश का नहीं हैं।

(3)

संधि शब्द	संधि-विच्छेद	संधि-भेद
महात्मा	**महा + आत्मा**	**स्वर संधि**

अथवा

भानूदय	भानु + उदय	**स्वर संधि**

(4)

सहायक क्रिया	मूल क्रिया
(i) गई	जाना
(ii) दिया	देना

(5)

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) सहना	सहाना	सहवाना
(ii) गिरना	गिराना	गिरवाना

(6) (i) नाच नचाना।

अर्थ : खूब परेशान करना।

वाक्य : वह शैतान लड़का अपनी माँ को रात-दिन नाच नचाता रहता है।

(ii) पौ बारह होना।

अर्थ : लाभ का अवसर मिलना।

वाक्य : आई. ए. एस. परीक्षा में यदि वह लड़का पास हो गया तो उसके पौ बारह हो जाएँगे।

अथवा

- मुहावरा : फूला न समाना।

मेडिकल में प्रवेश मिल जाने पर नकुल फूला न समाया।

(7)

कारक चिह्न	कारक भेद
(i) किसी को	कर्म कारक
(ii) प्रेरणा का	संबंध कारक

(8) नहीं, कोई आदर्श नहीं।

(9) (i) लक्ष्मी उसकी ओर देख रही थी।

(ii) रहमान ने लक्ष्मी को मारा है।

(iii) लक्ष्मी बड़ी घबराई हुई थी।

(10) (i) संयुक्त वाक्य।

(ii) (1) शायद चाची जली-भुनी रहती थी।

(2) मन अब सुकून अनुभव नहीं कर रहा था।

(11) (i) वे भारत के असली सपूत थे।

(ii) सोमनाथ की समृद्धि इतिहास में प्रसिद्ध है।

(iii) अब हमारी जिंदगी नहीं बचेगी।

प्र. 5. (अ), (आ) तथा (इ)

उपयोजित लेखन की कृतियों के स्व-मूल्यमापन संबंधी

उपयोजित लेखन के प्रश्नों को हल करते हुए विद्यार्थियों को अपने विचार, अपनी भाषा में लिखने होते हैं। ये प्रश्न मुक्तोत्तरी प्रकार के प्रश्न हैं। इनके उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

नमूना कृतिपत्रिका में दिए गए ऐसे प्रश्नों के उत्तर अंक योजना को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी स्वयं चेक करें और अपने द्वारा लिखे गए उत्तरों को जाँचें। आवश्यकता हो तो विद्यार्थी अपने विषय-शिक्षक की सहायता लें।

उपयोजित लेखन के अधिक अभ्यास हेतु '**नवनीत हिंदी (LL) उपयोजित लेखन : कक्षा दसवीं**' में दिए गए उपयोजित लेखन के नमूनों का अध्ययन अवश्य करें।